1. इंतज़ार

वो वापस आएगा
जो चाहेगा
जैसे चाहेगा करेगा
जो चाहेगा कहेगा
जो होना होगा
होगा
यों उसे कोई आशा नहीं
है तो बस एक इंतज़ार
कि आना है उसे
एक नियति की तरह।

कविता का गढ़ना होता है
सुखद जितना
होता है सुखद कहीं ज़्यादा
कविता को जीना
कविता का दर्द होता है जितना घातक
होता उससे कहीं ज़्यादा
तकलीफ़देय
उसका सवाल की तरह तन जाना
कि अब उसका
कद्रदान कोई हो
उसु सुनने जानने वाला कोई तो हो।
यों बाज़ार में कविता की हाट
बहुत सस्ती है
उससे भी सस्ती है सांसें
जिन्हें कविता जीती है।
मरती है।।

2.
तुम्हारे अहं से
सदा ही ऊंची होगा
मेरा स्वाभिमान
होती है जैसे
आकाश से ऊंची
उड़ान।

धूप सोने की तरह चमकती है
चूल्हे की तरह धधकती है
ज़िन्दगी दोनों की गर्माइश में
खूब पनपती है।

3.
तुम कहोगे
धुआं
मैं कहूंगी आग
तुम कहोगे-
रस्सी
मैं कहूंगी सांप
गोया कि
धुंए को आग
और
रस्सी को सांप बनने
या कि बनाने में
कोई देर नहीं लगती।

4.
मैं बहुत परेशान हूं
क्योंकि लोग
गोटियों की तरह इस्तेमाल करते हैं
ज़िन्दगी को बनाकर
बिसात
बेहिसाब जुआ खेलते हैं-
ईमानदारी और सच्चाई से
अपनी तमाम
निष्ठा के बावजूद
कर्मणा के युधिष्ठिर हार जाते हैं
आस्था
द्रोपदी सी ठगी रह जाती है
उसूलों की राजसभा में
प्रतिपल के इस महाभारत से कैसे हो निजात
मैं परेशान हूं।

5.
औरतों की सभा में
औरत आई लेकर-
औरत की पुकार
औरत के अधिकार
औरतों की सभा में
औरतों के सवाल
औरतों की चाल
औरत हो गई बेहाल
योजनाएं खुशहाल
औरत फटेहाल
कर्मणा निढाल।